

दिए गए नीचे तक विस्तार नहीं हो जाता है
तब तक इस बाद-पत्र के जरिये किसी भी प्रकार का
अनुबंध वादियां प्राप्त करने की इच्छा नहीं है।

उक्त बादशाह शर्मा का राजीस्व विद्युत-पत्र प्राप्त
न्यायालय में प्रभावशून्यता विस्तार नहीं हो जाता
है तब तक वादियों को इस न्यायालय में किसी
प्रकार का अनुबंध करने का अधिकार नहीं दिया जा
सकता है। अतः यह नतीजा भी वादियों के
बदलाव प्रतिवादीगण के पास में निर्धारित
की जाती है।

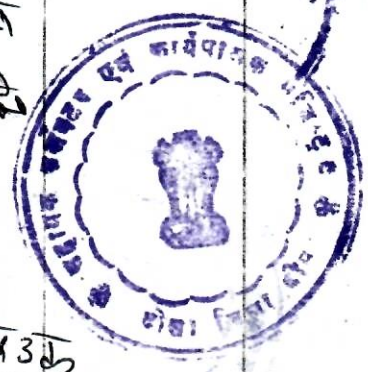
4.

नतीजा-पत्र - आप बाद में उक्त बादशाह शर्मा
के बाद को इस न्यायालय के प्रवक्ताधिकार एवं संज्ञाधिकार
नहीं होने से वादियों का बाद शर्मा के योग्य है। -

उक्त बाद में जब तक राजीस्व विद्युत-पत्र प्रभावशून्य,
बोना निर्दिष्ट न्यायालय में नहीं हो तब तक यह बाद
पत्रने प्रभाव नहीं है। राजीस्व विद्युत-पत्र को
निर्वाही काल में का संज्ञाधिकार एवं
प्रवक्ताधिकार इस न्यायालय में नहीं होने से
इस बाद में वादियों को को किसी भी प्रकार का
अनुबंध देना जाना न्यायालय में नहीं होने
से यह नतीजा भी प्रतिवादीगण के पास में
निर्धारित की जाती है।

5.

आप बाद में उक्त बादशाह शर्मा का वादियों के द्वारा उक्त
राजीस्व विद्युत-पत्र को निरस्त करने का बाद निर्दिष्ट
न्यायालय में होने से यह बाद इस न्यायालय में चलने के
बाद



पक्षों को निम्नलिखित प्रमाण है:- उक्त
वादग्रस्त शूरी के सम्बन्धित विद्वान् पत्र को
निम्नलिखित माता का वाद वादियों को निम्नलिखित
न्यायालय में मातृका होने के कारण पदकाद को
न्यायालय में चलाने योग्य नहीं होने के
कारण पदकाद की भी वादिका के विरुद्ध
प्रतिकारवाही के पत्र में निर्दिष्ट की जाती है।

6. उत्तरोप? - वादग्रस्त शूरी का राजीखर्च

विद्वान्-पत्र वादियों के विरुद्ध न्यायालय के द्वारा
वादियों की उपस्थिति में, वादियों की स्थिति में
विद्वान्-पत्र उपपंजीयक दौला में वही किना
गया है। इनामिल वादियों को वाद चलाने योग्य नहीं है तथा
राजीखर्च विद्वान्-पत्र को निम्नलिखित करने का क्षेत्राधिकार
सब अयोगाधिकार रूप न्यायालय को नहीं होने के
वादियों का वाद खारिज किया जाता है। पर्या
पिडी जारी है। उक्त का फैसला शूरी को
नकाद को कसदे तथा वाद वकालत
जबकि लख गया है। निर्णय राजस्थान
लोक अदालत के मा कोर्ट जीपादा के मातृका
कारण को निम्नलिखित जाति लु न्याय
व्यापार



(Signature)
सहायक कलेक्टर
दोसा